नई शिक्षा नीति 2020

आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

नई शिक्षा नीति 2020

आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा

प्रधान सम्पादक

डॉ0 धीरज सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

सम्पादक

सचिन कुमार वर्मा

सहायक प्राध्यापक, बी.एड. विभाग
डी. एस, कॉलेज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।

नमूना • SAMPLE

ADHYAYA

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

दिल्ली (**भारत**)

प्रकाशक

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

हेड ऑफिस : ए–108, स्ट्रीट न0. 1/3,
कौशल पुरी, दिल्ली–110094 (भारत)

Phone : 9643620664, 8744955183
E-mail : adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com
Website : www.adhyayabooks.com

नई शिक्षा नीति 2020:
आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा

संस्करण : 2021

© **सम्पादक**

ISBN: 978-93-91284-09-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

वीरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

समर्पण

सादर समर्पित———



परम् श्रद्धेय डॉ. गीता सिंह, पूर्व उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र, राजा मोहन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, अयोध्या, उ.प्र.

एवं

डॉ. भानु प्रताप सिंह, पूर्व प्राचार्य, ए.पी.एन. पी.जी. कालेज, बस्ती

को सादर समर्पित।

आप जैसे सर्वश्रेष्ठ गुरु दम्पति का योग्य, कुशल, स्नेहिल, उर्जामयी, सकारात्मक एवं प्रेरणास्पद निर्देशन व मार्गदर्शन मुझे अपना शोध कार्य पूर्ण करने में प्राप्त हुआ।

सदैव आपका ऋणी व आभारी

आपका एक अकिंचन विद्यार्थी

धीरज सिंह

नमूना • SAMPLE



प्रो० (डॉ०) सुबोध बाला गुप्ता
शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ़
प्रोफेशनल स्टडीज़ मोहन नगर, गाज़ियाबाद।

भूमिका

29 जुलाई 2020, भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तिथि के रूप में अंकित हो गई है, क्योंकि इस दिन देश को 34 वर्षों की दीर्घ प्रतीक्षा के पश्चात् एक नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति को नयी शिक्षा नीति 2020 का नाम दिया गया है। इस शिक्षा नीति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लिया है। 21वीं शताब्दी की इस प्रथम शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था से सम्बंधित सभी पक्षों का गम्भीरता से व्यापक अध्ययन करते हुए अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं जिससे आने वाले समय में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव होने की सम्भावना शिक्षाविदों द्वारा व्यक्त की जा रही है।

आज विश्व तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप आज कुशल/अर्ध कुशल या अकुशल कामगारों के स्थान पर मशीने काम कर रही हैं। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से सम्पूर्ण विश्व जूझ रहा है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधन आज चिंता का विषय हैं। स्वच्छ पेय जल, स्वच्छ वायु एवं पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध कराना आज एक चुनौती बन गई है। आज सम्पूर्ण विश्व में स्थायी विकास की चर्चा पर जोर है। ऐसी परिस्थितियों में देश में एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा था जो भारतीयों को भारत से जोड़ते हुए, राष्ट्रीय व वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल कार्मिकों, उत्पादक नागरिकों एवं मानवता व जनकल्याण के लिए समर्पित भावी पीढ़ी का

निर्माण व विकास कर सके। नयी शिक्षा नीति 2020 को एक ऐसी ही शिक्षा नीति के रूप में तैयार किया गया है। इस शिक्षा नीति में प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को आधार मानते हुए भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक ज्ञान, विज्ञान व तकनीकि से संपन्न करते हुए भारत को ज्ञान के वैश्विक महाशक्ति के रूप में विकसित व स्थापित करने का संकल्प लिया गया है।

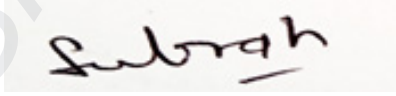
इस शिक्षा नीति में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के सभी पक्षों पर व्यापक विचार–विमर्श करते हुए अपना अभिमत प्रस्तुत किया गया है एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कमियों को दूर करने के लिए सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। आज का युग विज्ञान का युग है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नही है। आज वैज्ञानिक संसाधनों और तकनीकियों का शिक्षा के क्षेत्र में जम कर उपयोग किया जा रहा है। कोरोना महामारी की भी शिक्षा को पूर्णतः तकनीकि आधारित बनाने में व्यापक भूमिका रही है। वर्तमान और भविष्य परिस्थियों को देखते हुए इस शिक्षा नीति में शिक्षा के तकनीकीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

यह शिक्षा नीति राष्ट्रीय अपेक्षाओं पर कितना खरा उतरेगी, यह तो आने वाला समय ही बताएगा, किन्तु जिन उद्देश्यों को लेकर इस नयी शिक्षा नीति का निर्माण किया गया है, वे निश्चित रूप से पुनीत, महान एवं समय संगत हैं। भारत की गौरवशाली व समृद्ध विरासत से परिचित कराते हुए भारतीयों में गौरवबोध का भाव उत्पन्न करने एवं आधुनिक भारत के निर्माण का जो पावन उद्देश्य लेकर इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति को तैयार किया गया है, निश्चित रूप से वह सराहनीय व प्रशंसनीय है। आशा है इन अपेक्षाओं पर यह शिक्षा नीति भविष्य में पूरा करने में सफल होगी।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि **नयी शिक्षा नीति 2020 विषय पर आधारित "नयी शिक्षा नीति 2020 : आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा"** शीर्षक से डॉ0 धीरज सिंह, विभाग. ाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाज़ियाबाद एवं सचिन कुमार वर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक

शिक्षा विभाग, धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ द्वारा पुस्तक का सम्पादन किया गया है। प्रस्तुत सम्पादित पुस्तक में नयी शिक्षा नीति 2020 के परिचय, उद्देश्य, गठन, प्रासंगिकता, भविष्य में संभावनाओं व चुनौतियों, मुख्य अनुसंशाओं, सुझावों सहित शिक्षा के सभी स्तरों व पक्षों के लिए की गयी संस्तुतियों आदि से सम्बंधित कुल 34 आलेखों को सम्मिलित किया गया है।

मैं इस पुस्तक के कुशल सम्पादन हेतु डॉ0 धीरज सिंह एवं सचिन कुमार वर्मा को बधाई देती हूँ। इस पुस्तक में अपने आलेखों के माध्यम से योगदान देने के लिए सभी विद्वान भी बधाई के पात्र हैं। मैं सम्पादक मण्डल सहित सभी योगदानकर्ताओं की सराहना एवं प्रशंसा करती हूँ जिनके सामूहिक प्रयास के परिणामस्वरूप ऐसे समसामयिक, प्रासंगिक व महत्वपूर्ण विषय पर आधारित यह पुस्तक साकार रूप ले रही है।



कार्तिक पूर्णिमा **प्रो0 (डॉ0) सुबोध बाला गुप्ता**

(19 नवम्बर, 2021)

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारे राष्ट्र नायकों के समक्ष देश की राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों को सुधारते हुए देश में एक उपयुक्त शिक्षा प्रणाली स्थापित व विकसित करने की चुनौती थी। चुनौती इन बदली हुई परिस्थितियों में भारत को पुनः स्थापित करते हुए समग्र विकास के मार्ग पर गतिमान करने की भी थी। 1947 में बंटवारे के परिणाम स्वरूप उपजी विभीषिका से जूझते देश को साम्प्रदायिकता की आग से निकालते हुए एक समरस समाज के रूप में स्थापित करने की भी चुनौती थी। इस प्रकार 1947 में नव स्वतंत्र राष्ट्र भारत के समक्ष अनेक चुनौतियां थी। अंग्रेजों व मुस्लिमों द्वारा सैकड़ों वर्षो तक लूटे गए राष्ट्र के समक्ष विकास की पटरी पर चलने के लिए संसाधन जुटाने का भी प्रश्न था। संक्षेप में कहें तो एक प्राचीन राष्ट्र का पुनरोदय के पश्चात पुनर्स्थापना और पुनर्निर्माण का पुनीत कार्य हमारे राष्ट्र नायकों द्वारा सम्पन्न किया जाना था। इन चुनौतियों से जूझने के लिए राष्ट्र नायकों ने अनेक यत्न किए।

हमारे राष्ट्र नायकों को यह भलीभांति ज्ञात था कि किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला वहां की शिक्षा व्यवस्था होती है। इसीलिए स्वतंत्रता के तुरंत बाद, 1948 में महान दार्शनिक, शिक्षक, चिंतक, विचारक व राजनीतिज्ञ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की गई। इसके पश्चात 1952 में मुदालियर आयोग, 1964 में कोठारी आयोग की स्थापना की गई। 1968 में, कोठारी आयोग की संस्तुतियों के आधार पर देश को पहली शिक्षा

नीति मिली। पुनः 1986 में देश को दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। इनके अतिरिक्त समय–समय पर अनेक समितियों, आयोगों आदि का गठन देश में शिक्षा के विकास के लिए होता रहा किंतु जिन आकांक्षाओं के साथ देश 1947 में स्वतंत्र हुआ था, वह पूरी नहीं हो पाई।

1986 के पश्चात एक लंबे समय से देश में समयानुकूल, प्रासंगिक तथा भारतीय परिस्थितियों व परम्पराओं के अनुरुप, प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परम्परा से आप्लावित राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा था। इस आवश्यकता की गंभीरता को समझते हुए, 2014 में देश के नव निर्वाचित, यशस्वी प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस दिशा में सार्थक पहल करते हुए कार्य करना प्रारम्भ किया। इसके परिणाम स्वरूप देश को जुलाई 2020 में एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली जिसे हम नई शिक्षा नीति 2020 के नाम से संबोधित करते हैं।

नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित मानव, समाज व संस्कृति केंद्रित एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विधान करने वाली है जिसमें वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप ज्ञान समाज विकसित करने की क्षमता होगी, विज्ञान व तकनीकी का समावेशन होगा एवं आधुनिक या प्राचीन सनातनी परम्परा का द्वंद, जो भारतीय समाज में दीर्घ काल से चला आ रहा है, से मुक्ति दिलाने वाली होगी। यह शिक्षा नीति सैकड़ों वर्षो की गुलामी के फल स्वरुप स्थाई बन चुकी गुलामी की मानसिकता को दूर करने वाली सिद्ध होगी। यह शिक्षा नीति भारत को आत्मनिर्भर भारत में बदलने व स्वाभिमानी भारत की निर्मिति का सूत्रपात है।

नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के सभी पक्षों पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए, गुणवत्ता युक्त शिक्षा सभी को उपलब्ध हो सके, इस बात पर जोर दिया गया है। इस शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य है – मानव को जैविक प्राणी की श्रेणी से सांस्कृतिक प्राणी के रूप में रूपांतरित करते हुए एक ऐसे मनुष्य का निर्माण करना है जो वर्तमान सदी व वैश्विक परिस्थितियों की चुनौतियों व समस्याओं का सामना करते हुए उनका हल प्रस्तुत कर सके, राष्ट्र के संवैधानिक मूल्यों यथा– समता,

समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता, परस्पर सम्मान, सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र पर आधारित समावेशी व बहुलतावादी समाज के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके, ताकि भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने के स्वप्न को साकार किया जा सके।

आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि नई शिक्षा नीति 2020, राष्ट्र व राष्ट्र के नागरिकों के समग्र, युगानुकूल व समरस विकास में सक्षम होगी और आत्मनिर्भर, श्रेष्ठ व कौशल भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगी।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक क्रांतिक. ारी व युगांतरकारी नीति के रूप में सिद्ध होगी। एक शिक्षक होने के नाते इस युगांतरकारी घटना का साक्षी बनना व इस हेतु किसी भी रूप में सहभागी बनना, गर्व का विषय होगा। भारतीय समाज व राष्ट्र के लिए ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर पुस्तक सम्पादित करने से मैं स्वयं को रोक नहीं पाया और नई शिक्षा नीति के विविध पक्षों पर आधारित एक पुस्तक सम्पादित करने का निर्णय लिया। प्रस्तुत सम्पादित पुस्तक का शीर्षक है – **"नई शिक्षा नीति 2020 : आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा"**। इस पुस्तक में विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों, अध्येताओं एवं शोधार्थियों ने नई शिक्षा नीति के सम्बंध में अपने विचारों को, अपने आलेख के माध्यम से सहयोग किया है। इस पुस्तक में देश के विभिन्न भागों से प्राप्त कुल 34 आलेखों को शामिल किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक कुल 34 आलेखों की संचयिका होगी।

इस पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए मैं हिन्दी भाषा एवं साहित्य के परम विद्वान, राष्ट्रवादी विचारक एवं चिंतक जो हिन्दी के प्रचार–प्रसार में सतत सक्रिय रहते हैं, डॉ0 योगेंद्र प्रताप सिंह, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, इलाहबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, के प्रति श्रद्धावनत हूँ और हृदय तल से आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इस पुस्तक के लिए अपनी स्नेहिल, ऊर्जायुक्त शुभकामनाएं प्रेषित करने के लिए मैं हिन्दी की अनन्य साधिका परम श्रद्धेय, विदुषी डॉ0 गायत्री सिंह, पूर्व प्राचार्य, आर्मापुर पी जी कॉलेज कानपुर एवं पूर्व अधिष्ठाता, कला

संकाय श्री छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के प्रति मैं भी धन्यवाद सहित आभारी हूँ। आप विद्वतद्वै का प्रेरणा, ऊर्जा, स्नेह मिश्रित सकारात्मक मार्गदर्शन एवं सानिध्य मुझे सदैव प्राप्त रहा है।

इस समकालीन, प्रासंगिक व राष्ट्रीय महत्व के विषय पर अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सभी विद्वानों, शिक्षक साथियों, शोधार्थियों एवं अध्येताओं को धन्यवाद और आभार। विभिन्न विद्वानों द्वारा उपरोक्त विषय पर अभिव्यक्त विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए श्री वीरेंद्र कुमार, अध्याय पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली का भी धन्यवाद एवं आभार। इस कार्य में मेरे सहयोगी रहे मेरे मित्र संपादक श्री सचिन वर्मा जी को भी हृदय से धन्यवाद व आभार। प्रस्तावित विचार को पुस्तकाकार रूप देने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने सभी सहयोगियों, मित्रों व आत्मीय स्वजनों को भी हृदय से आभार सहित धन्यवाद। प्रिय पत्नी डॉ0 रेनू सिंह एवं अपने दोनों पुत्रों अद्वैत और अथर्व के प्रति विशेष अनुराग पूर्ण आभार।

...डॉ0 धीरज सिंह

नमूना SAMPLE



डॉ. गायत्री सिंह
पूर्व प्राचार्य, अर्मापुर पी जी कॉलेज कानपुर
एवं
पूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय,
श्री छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

शुभकामना संदेश

34 वर्षों के दीर्घ अंतराल के पश्चात देश को एक बार पुनः राष्ट्रीय नवीन शिक्षा नीति 2020 मिली है। यह नीति परम आदरणीय मंत्री मोदी के दिए गए सूत्र आत्मनिर्भर भारत और कौशल भारत की बुनियाद पर आधारित है। जिस प्रकार इस शैक्षिक नीति में भारत भारतीयता, भारतीय संस्कार, प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, धर्म, दर्शन को महत्वपूर्ण मानते हुए इस पर चर्चा की गई है, ऐसा लगता है कि यह नीति वर्षों वर्ष की भारत की गुलाम मानसिकता को त्यागने में सक्षम होगी। संक्षेप में कहें तो यह शिक्षा नीति यदि भली प्रकार क्रियान्वित हो जाए तो भारत के विकास का पहिया रुकने वाला नहीं है। बहुत उच्च आकांक्षाओं को लेकर इस नीति का निर्माण किया गया है। यह शिक्षा नीति भारत निर्माण के पुनीत कार्य में कितना सफल होगी, यह तो समय ही बताएगा, किन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि इस शिक्षा नीति के उद्देश्य भारत को विश्वगुरु के पद पर आसीन करने में सक्षम हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि मातृभाषा में ही बच्चा सर्वाधिक उत्कृष्ट, सहज, सरल व स्वाभाविक ढंग से अधिगम कर पाता है। इस बात को स्वीकारते हुए इस नीति ने वर्षों से अंधेरे में गुम हो रही राजभाषा को राष्ट्रीय पटल पर विकसित करने की कार्ययोजना को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार करते हुए व्यापक आधार प्रदान किया है। स्थानीय भाषाओं/मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने की जो बात इस नीति

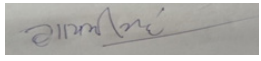
SAMPLE

में कही गयी है, उसे दृढ़ इच्छाशक्ति व ठोस कार्ययोजना के साथ अमल में लाना अति आवश्यक है।

मुझे यह जानकार अपार प्रसन्नता हुई की नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आधार बनाते हुए डॉ0 धीरज सिंह, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशन स्टडीज, मोहन नगर, ग़ाज़ियाबाद एवं सचिन कुमार वर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ ने **''नई शिक्षा नीति 2020 : आधुनिक भारत की शैक्षिक रूपरेखा''** शीर्षक से पुस्तक का सम्पादन किया है। पुस्तक के सफल सम्पादन के लिए आप दोनों बधाई के पात्र हैं। अपने आलेख के माध्यम से सहयोग करने वाले विद्वतजनों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने अपने ज्ञान को लिपिबद्ध करते हुए अपने लेखकीय दायित्व को बखूबी निभाया है। ऐसे सभी लेखकगण भी बधाई के पात्र हैं।

विद्वतजनों एवं सम्पादक के गहन अध्ययन और बुद्धिमत्तापूर्ण लेखन से सुसज्जित यह पुस्तक अध्येताओं के लिए ग्राह्य, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगी, मेरी यही अनुशंसा है।

शुभ मंगल कामनाओं सहित ————



15 अक्टूबर, 2021 (विजय दशमी) **डॉ. गायत्री सिंह**

विषय–सूची

	समर्पण	*v*
	भूमिका	*vii*
	सम्पादकीय	*xi*
	शुभकामना संदेश	*xv*
	योगदानकर्ता सूची	*xxi*
1.	नई शिक्षा नीति 2020 : एक विश्लेषण *–डॉ. धीरज सिंह*	1
2.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : चुनौतियाँ *–प्रो. नंदलाल मिश्र, मेधा मिश्रा*	18
3.	भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक अवलोकन *–डॉ. वी सुजाता*	28
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापक शिक्षा की रूपरेखा का विश्लेषणात्मक अध्ययन *–डॉ. विष्णु कुमार*	40
5.	हिंदी में उपलब्ध विज्ञान और तकनीकी साहित्य और पाठ्यक्रम *–राहुल खटे*	48
6.	नई शिक्षा नीति 2020: तकनीकी आधारित आधुनिक संस्कारवान शिक्षा की संकल्पना *–डॉ. मिथलेश चौहान*	58

SAMPLE

7. नवीन शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय भाषाएं 72
—डॉ. नीरज कुमार सिंह, डॉ. बबिता सिंह

8. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख आधारभूत सिद्धांत 79
—डॉ. अनामिका सिंह, डॉ. समता सिंह

9. नई शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक की गतिशीलता 88
—डॉ. अनीता चौधरी, ज्ञप्ति

10. नई शिक्षा नीति : अध्यापक शिक्षा में नवाचारों की भूमिका 99
—डॉ. अरूणा शर्मा

11. बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में 103
—डॉ. मोनिका मित्तल

12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति—2020 एवं समावेशी शिक्षण 109
—डॉ. मनोज पाटीदार

13. नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ 115
—डॉ. यशवन्त यादव

14. नई शिक्षा नीति 2020 और भारत के लिए सम्भावनाएं 124
—डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी

15. नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा की विषय वस्तु तथा प्रक्रिया हेतु एक नया मोड़ 128
—डॉ. सुनीता पन्द्रो

16. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : संक्षिप्त अवलोकन 143
—डॉ. रविन्द्र कुमार

17. नई शिक्षा नीति 2020 : एक नए भारत की संकल्पना 153
—डॉ. मनीषा सिंह

SAMPLE

18. एनईपी 2020 एवं विद्यालयी पाठ्यक्रम में आईसीटी का एकीकरण 163
—डॉ. श्रुति कंवर

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में व्यावसायिक शिक्षा अवसर और चुनौतियाँ 173
—डॉ. रजनी शर्मा, सीमा शर्मा

20. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका 183
—सचिन कुमार वर्मा

21. नई शिक्षा नीति का प्रारम्भिक शिक्षा पर प्रभाव 192
—दुर्गेशलता भगत

22. नई शिक्षा नीति 2020: नए बदलाव, सकारात्मक पहल 199
—श्रीमती अमर ज्योति

23. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और वित्त व्यवस्था 206
—मोरेश्वर भिकाजी शेन्डे

24. नई शिक्षा नीति 2020 और वित्त 215
—डॉ. नीलम मिश्रा, डॉ. रीता तिवारी, डॉ. राजेंद्र कुमार गुप्ता

25. उच्च शिक्षा की गुणवत्ता उन्नयन हेतु शोध प्रविधि का प्रयोग एवं नई शिक्षा नीति : 2020 218
—डॉ. सुनीता पन्द्रो

26. नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित सैद्धांन्तिक पक्ष 226
—श्रीमती हरीतिमा दीक्षित

27. कोविड के अगले युग में परिवर्तन और शिक्षा की नई संभावनाएं 231
—नीलेन्दु बिस्वास

SAMPLE

28. नई शिक्षा नीति के संदर्भ में समता मूलक और समावेशी शिक्षा 241
—मीनाक्षी शर्मा

29. नई शिक्षा नीति 2020 और गुणवत्ता परक शोध 250
—डॉ. राजेंद्र कुमार गुप्ता, डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी, डॉ. सतीश कुमार गौतम

30. राष्ट्रीय शिक्षा नीति—2020 : प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल 253
—आशीष सिंह

31. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : विकासोन्मुखी भारत में शिक्षा की अपेक्षाएं 263
—रविकांत वर्मा

32. नई शिक्षा नीति 2020, में निहित स्कूली शिक्षा का विश्लेषण 277
—जयप्रकाश

33. महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और नई शिक्षा नीति 284
—आकाश अवस्थी

34. बौद्धिक सम्पदा में 'शिक्षा और समाज' के समावेश में नई शिक्षा नीति योजना में समाहित नई डिजिटल पहल का महत्त्व व उपयोगिता 294
—डॉ. हंसकुमार शर्मा

नमूना SAMPLE

योगदानकर्त्ता सूची

1. **डॉ. धीरज सिंह,** विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
2. **प्रो. नंदलाल मिश्र,** अधिष्ठाता, कला संकाय, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना, मध्यप्रदेश प्रदेश।
3. **मेधा मिश्रा,** शोध–छात्रा, प्रबंधन संकाय, म गा चि ग्रा विश्वविद्यालय चत्रकूट।
4. **डॉ. वी सुजाता,** प्राचार्य, जगद्गुरु शंकराचार्य कालेज ऑफ एजुकेशन, आमदी नगर हुडको, भिलाई (छ.ग.)।
5. **डॉ.विष्णु कुमार,** एसोसियएट प्रोफेसर (शिक्षा), सेन्ट्रल एकेडमी टी.टी. कॉलेज, अजमेर (राज.), एवं अतिथि शिक्षाक शिक्षा विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।
6. **राहुल खटे,** उप प्रबंधक (राजभाषा)।
7. **डॉ. मिथलेश चौहान,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शिक्षण विभाग, इविंग क्रिश्चियन कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।
8. **डॉ. नीरज कुमार सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय, सैफई, इटावा।
9. **डॉ. बबिता सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय, सैफई, इटावा।

SAMPLE

10. **डॉ. अनामिका सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ग्राम्यांचल महाविद्यालय, हैदर गढ़, बाराबंकी।
11. **डॉ. समता सिंह,** टी0 जी0 टी0 हिन्दी, देलही पब्लिक स्कूल, कल्याणपुर, कानपुर।
12. **डॉ. अनीता चौधरी,** सहायक आचार्य (बी.एड़.), देवनागरी महा. विद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)।
13. **ज्ञप्ति,** (छात्रा), बी.एससी.,बी.एड़. (तृतीय वर्ष), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (राज.)।
14. **डॉ. अरूणा शर्मा,** एच.आई.सी.टी. शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर।
15. **डॉ. मोनिका मित्तल,** सहायक प्राध्यापक, गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज, चंडीगढ़।
16. **डॉ. मनोज पाटीदार,** सहायक प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय मनावर, मध्य प्रदेश।
17. **डॉ. यशवन्त यादव,** (सहायक आचार्य, इतिहास विभाग), सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर उ0प्र0।
18. **डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी,** अतिथि विद्वान भूगोल, शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा, जिला सतना मध्य प्रदेश पिन कोड 485661
19. **डॉ. सुनीता पन्द्रो,** एम.ए. हिन्दी साहित्य, एम.ए. समाजशास्त्र एवं यूजीसी–नेट समाजशास्त्र में भोपाल एम.पी.।
20. **डॉ. रविन्द्र कुमार,** (अतिथि विद्वान), प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, (म0प्र0)।
21. **डॉ. मनीषा सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलिज ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज़, मोहन नगर, गाजियाबाद।
22. **डॉ. श्रुति कंवर,** सहायक प्राध्यापक, स्कूल ऑफ एजुकेशन, गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा।

SAMPLE

23. **डॉ. रजनी शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपाटमेंट, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाज़ियाबाद।
24. **सीमा शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपाटमेंट, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाज़ियाबाद।
25. **सचिन कुमार वर्मा,** सहायक प्राध्यापक, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज कॉलेज अलीगढ़, उत्तरप्रदेश।
26. **दुर्गेशलता भगत,** असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत रा0म0 स्नात0 महा0, इटावा।
27. **श्रीमती अमर ज्योति,** असिस्टेंट प्रोफेसर, (बी0 एड0), श0 मं0 पा0 राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, मेरठ।
28. **मोरेश्वर भिकाजी शेन्डे,** सहायक प्राध्यापक व वाणिज्य विभागप्रमुख, नूतन आदर्श कला, वाणिज्य आणि श्रीमती, म. ह. वेगड विज्ञान महाविद्यालय, उमरेड।
29. **डॉ. नीलम मिश्रा,** अतिथि विद्वान, अर्थ शास्त्र, अतिथि विद्वान कॉमर्स, अतिथि विद्वान कामर्स शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा जिला सतना मध्य प्रदेश।
30. **डॉ. रीता तिवारी,** अतिथि विद्वान अर्थ शास्त्र, अतिथि विद्वान कॉमर्स, अतिथि विद्वान कामर्स शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा, जिला सतना मध्य प्रदेश।
31. **डॉ. राजेंद्र कुमार गुप्ता,** अतिथि विद्वान अर्थ शास्त्र, अतिथि विद्वान कॉमर्स, अतिथि विद्वान कामर्स शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा जिला सतना मध्य प्रदेश।
32. **डॉ. सुनीता पन्द्रो,** एम.ए. हिन्दी साहित्य, एम.ए. समाजशास्त्र।
33. **श्रीमती हरीतिमा दीक्षित,** प्रवक्ता शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफ़ेशनल स्टडीज़ मोहन नगर, ग़ाज़ियाबाद।
34. **नीलेन्दु बिस्वास,** असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, असंनगर मदन मोहन तर्कालंकार महाविद्यालय, नादिया, पश्चिम बंगाल।

SAMPLE

35. **मीनाक्षी शर्मा,** व्याख्याता, विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, सीटीई, उदयपुर (राज.)।
36. **डॉ. राजेंद्र कुमार गुप्ता,** अतिथि विद्वान कामर्स, भूगोल, कामर्स, शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा जिला सतना मध्य प्रदेश।
37. **डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी,** अतिथि विद्वान कामर्स, भूगोल, कामर्स, शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा जिला सतना मध्य प्रदेश।
38. **डॉ. सतीश कुमार गौतम,** अतिथि विद्वान कामर्स, भूगोल, कामर्स, शासकीय महाविद्यालय ऊंचेहरा जिला सतना मध्य प्रदेश।
39. **आशीष सिंह,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, ग़ाज़ियाबाद।
40. **रविकांत वर्मा,** शोधार्थी, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, गलगोटिया यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश।
41. **जयप्रकाश,** (शोध छात्र), शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ।
42. **आकाश अवस्थी,** शोध विद्यार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, जूनियर रिसर्च फ़ेलो, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
43. **डॉ. हंसकुमार शर्मा,** प्राचार्य, श्री वीर तेजाजी पी.जी. महाविद्यालय, राडावास जिला– जयपुर (राज.)।

नमूना SAMPLE

अध्याय

1

नई शिक्षा नीति 2020 : एक विश्लेषण

डॉ. धीरज सिंह

शिक्षा किसी भी समाज का आधार होती है। समाज में सर्व कल्याण की भावना उत्पन्न करते हुए कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना, शिक्षा के प्रमुख कार्यों में से एक है। शिक्षा के द्वारा ही समाज के नागरिकों में कर्तव्य पालन की भावना, नैतिकता, सहकारिता परोपकार आदि के गुण विकसित किए जाते हैं। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर को उसका मेरुरज्जु (रीढ़) सुव्यवस्थित आकार और मजबूत ढांचा प्रदान करता है, उसी प्रकार शिक्षा भी समाज को एक सुव्यवस्थित रूप देती है। शिक्षा समाज के सर्वतोन्मुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करते हुए उसे एक ऐसे सुदृढ़ धरातल पर खड़ा करती है जहां वह गौरव बोध को अनुभूत कर सकता है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही रहकर उसका विकास संभव है। समाज से अलग होकर उसका स्थान महत्वहीन हो जाता है। समाज अपने नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए एक व्यवस्थित शिक्षा प्रक्रिया निर्धारित करता है। व्यक्ति में सामाजिक गुणों का समावेश भी शिक्षा के द्वारा संपन्न होता है। इस प्रकार शिक्षा समाज की अमूल्य निधि है।

यदि हम भारत के सन्दर्भ में देखें तो पाते हैं कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही शिक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। अपनी सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली के आधार पर भारत को सम्पूर्ण विश्व में विश्व गुरु का स्थान प्राप्त था। विश्व के कोने–कोने से ज्ञान पिपासु लोग भारत शिक्षार्जन के लिए आते रहे और यहाँ की ज्ञान गंगा में सराबोर होकर यहाँ की ज्ञान सम्पदा और

SAMPLE

संस्कृति को पूरे विश्व में प्रसारित करते रहे। यह प्रक्रिया सैकड़ों वर्षों तक चलती रही, किंतु भारत की राजनीतिक परिस्थितियां बदलने के साथ ही यहां की शैक्षिक व सामाजिक व्यवस्था में भी व्यापक परिवर्तन हुए। पुरातन भारत सांस्कृतिक व शैक्षिक रूप से जितना समृद्ध व गौरवशाली रहा है उतना ही आर्थिक रूप से समृद्ध व वैभवशाली रहा है। आर्थिक रूप से अति सम्पन्न और समृद्ध होने का कारण विदेशियों के लिए भारत सदैव एक आकर्षक स्थल रहा। यहाँ की भौतिक समृद्धि और वैभव सदैव वाह्य आक्रमण का कारण रही है। भारत में विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं से पराजित होने के पश्चात बारहवीं सदी के अंत में भारत में इस्लामी सत्ता स्थापित हुई। कालांतर में परिस्थितियां बदली और इस्लामी सत्ता के स्थान पर अंग्रेजी सत्ता भारत में स्थापित हुई। इस प्रकार गुलामी के बंधन में विदेशी सत्ता के अधीन रहते हुए भारतवासियों ने 700 से अधिक वर्षों तक विदेशी सत्ता को बर्दाश्त किया।

गुलामी और विधर्मी सत्ता के इतने दीर्घकाल ने भारत का सामाजिक व शैक्षिक ताना–बाना छिन्न–भिन्न कर दिया था। गुलामी की इस दीर्घ अवधि में भारत की मूल आत्मा, धर्म, संस्कृति व संस्कार दबा दिए गए किंतु इनकी विलक्षणता के कारण अनेक प्रयत्नों के बाद भी इन्हें विदेशी सत्ता नष्ट नहीं कर पाई। लंबे संघर्ष और लाखों भारतीय सपूतों के बलिदान के परिणाम स्वरूप देश को 15 अगस्त 1947 ई0 में देश को स्वतंत्रता मिली। उस समय हमारे राष्ट्र नायकों के समक्ष स्वतंत्र राष्ट्र को एक सुनियोजित, क्रमबद्ध व व्यवस्थित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की चुनौती भी थी, साथ ही राष्ट्र के नागरिकों की नवीन आकांक्षाओं के अनुरूप राष्ट्र को विकसित करने के लिए भारतीय संस्कृति व परम्परा के अनुकूल शिक्षा प्रणाली की भी व्यवस्था करनी थी। सैकड़ों वर्षो की गुलामी की जंजीर तोड़ कर एक नवीन राष्ट्र के रूप में भारत अंगड़ाई ले रहा था। भारतीय जनमानस का हृदय नवीन उत्साह, ऊर्जा व उल्लास से भरा हुआ था। उनके मन में अनेक नई आकांक्षाएं एवं आशाएं हिलोरे मार रही थी। राष्ट्र की ऐसी परिस्थितियों में 1948 में महान दार्शनिक, विचारक, चिंतक, शिक्षक व राजनीतिज्ञ डॉ. सर्व पल्ली राधाकृष्णन जी की अध्यक्षता में विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की गई। देश

की इन बदली हुई राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों में अलग–अलग समय पर स्थापित शिक्षा आयोगों, नीतियों और समितियों ने शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1952 ईस्वी में माध्यमिक शिक्षा को केंद्र मानकर डॉ. लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में 23 सितंबर 1952 को माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। इसके पश्चात डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में विद्यालय शिक्षा प्रणाली को नवीन स्वरूप व नई दिशा देने के उद्देश्य से 1964 को राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन किया गया जिसे कोठारी आयोग भी कहा जाता है। कोठारी आयोग की संस्तुतियों के आधार पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में देश में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ई. में बनी। इसके पश्चात 1986 में देश में एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्धारित की गई। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक क्रांतिकारी शिक्षा नीति थी जिसमें एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए शिक्षा के प्रत्येक पक्ष पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए आधुनिक विश्व के अनुकूल आधुनिक और तकनीकी प्रधान शिक्षा की बात की गई। 1992 ई. में पुनः इस शिक्षा नीति की समीक्षा करते हुए इसे विस्तार दिया गया। इसके पश्चात भी देश में समय–समय पर अनेक शिक्षा आयोगों और समितियों का गठन देश की शिक्षा व्यवस्था को गति देने, विस्तार देने और राष्ट्र के नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किया जाता रहा, किंतु देश की आकांक्षाओं को पूरा करने में सफलता नहीं मिल सकी जिसका परिणाम यह रहा कि देश में बेरोजगारों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई। हमारी शिक्षा व्यवस्था युवाओं को आत्मनिर्भर, रोजगारपरक और कौशल युक्त बनाने में असफल रही। गांधी जी ने शिक्षा को बेरोजगारी के विरुद्ध बीमा माना था, किंतु स्वतंत्रता के पश्चात देश की शिक्षा व्यवस्था इस आकांक्षा को पूरा करने में सफल नहीं रही। 1986 के बाद लंबे समय से देश में एक समयानुकूल प्रासंगिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा था। 2014 में भारत के राजनीतिक पटल पर भारी उलटफेर हुआ और कांग्रेस पुनः 10 वर्षों पश्चात पराजित होकर सत्ता से बेदखल हो गई तथा श्री नरेंद्र मोदी ने मई 2014 में देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। इसके पश्चात देश में एक नई शिक्षा नीति की चर्चा ने जोर पकड़ा।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण

भारतीय जनता पार्टी ने 2014 के आम चुनाव हेतु अपने चुनावी घोषणा पत्र में एक नवीन शिक्षा नीति बनाने का विषय सम्मिलित किया था। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर जनवरी 2015 में पूर्व कैबिनेट सचिव टीआरएस सुब्रमण्यम के नेतृत्व में एक समिति ने इस पर चर्चा प्रारंभ की और 2017 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समिति में डॉ0 जे0 एस0 राजपूत जैसे विश्व प्रसिद्ध शिक्षाविद व विचारक भी एक सदस्य के तौर पर थे।

केंद्र सरकार ने देश की नवीन शिक्षा प्रणाली पर व्यापक सुझाव लेने का मन बनाया। इस समय तक श्रीमती स्मृति ईरानी के स्थान पर मानव संसाधन मंत्री के पद पर श्री प्रकाश जावेडकर जी आसीन हो चुके थे। श्री प्रकाश जावेडकर ने 2017 में राज्यसभा सांसद एवं इसरो के पूर्व अध्यक्ष अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉक्टर के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जिसने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा प्रस्तुत किया। समिति ने अपनी रिपोर्ट मंत्रालय को सौंप दी थी। 30 मई 2019 को डॉ. रमेश पोखरियाल जी ने मानव संसाधन मंत्री बने। उनके अथक प्रयास और केंद्र सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति व प्रतिबद्धता का परिणाम रहा कि 29 जुलाई 2020 को शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति 2020 लागू हो गई। इस प्रकार देश को 34 वर्षों के दीर्घ अंतराल के पश्चात नई शिक्षा नीति 2020 मिली।

नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य एवं उद्देश्य

तीन मानव संसाधन विकास मंत्रियों के कार्यकाल में तैयारी हुई यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक बहुत ही महत्वाकांक्षी शिक्षा नीति है। यह 21वीं शताब्दी की प्रथम शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करना है। इस नीति में भारत की ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को वरीयता देते हुए व बरकरार रखते हुए 21वीं सदी के अनुरूप भारत की शिक्षा व्यवस्था को जनआकांक्षाओं को पूरा करने वाली, वैश्विक स्तर के समानांतर, गुणवत्ता युक्त मूल्यपरक बनाने